International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

स्त्री चेतना की दृष्टि से फिल्म 'मदर इंडिया'

डा0 आलोक कुमार राय

मब्बी, दरभंगा

यह किसी भी रूप में अतिशयोक्ति नहीं है कि यह सभ्यता अपने चरित्र में मूलतः स्त्री–विरोधी है।[1] जिस तरह मनुष्य (पुरुष) प्रकृति का दोहन करता है, उसी तरह स्त्री का दोहन भी करता है। पहले माना जाता था कि जब शिक्षा का प्रसार होगा, ज्ञान–विज्ञान के सभी क्षेत्रें में तरक्की होगी, तब स्त्री के प्रति पुरुष की दृष्टि बदलेगी। यह नहीं कहा जा सकता कि ऐसा बिल्कुल नहीं हुआ है। स्त्री ने बहुत सारी आजादियाँ अर्जित की हैं। लेकिन यह सब कुछ पुरुष ने उसे दिया नहीं है, उसने अपने संघर्ष से पाया है।[2] सच तो यह है कि पुरुष मानसिकता को अभी भी बदलना बाकी है।

वास्तविक रूप में, जन्म के साथ ही स्त्री के साथ दूसरे दरजे का व्यवहार शुरु हो जाता है। पहले तो उसे जिन्दा रहने की इजाजत ही नहीं मिलती है। फिर भी वह बच निकलती है, तो उसकी प्रतिभा को कुंठित करने के, उसके व्यक्तित्व को नष्ट करने के उपाय किये जाते हैं।[3] वह ज्यादा से ज्यादा पुरुषों के लिए उपयोगी हो सके, इसी लायक उसे बनाया जाता है। सहनशीलता को उसका सबसे बड़ा गुण बताया जाता है, ताकि वह पुरुष की सारी ज्यादतियां चुपचाप झेलती रहें। सहनशीलता कोई दुर्गुण नहीं है, पर वह स्त्री–पुरुष दोनों में होनी चाहिए। लेकिन जब स्त्री को सहनशील बनाया जाता है तो इसका मतलब होता है कि वह सारे अपमान झेल ले, अपनी इच्छाएँ मार ले, और किसी अन्याय का विरोध न करे।[4]

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

स्त्री के इस परंपरागत स्वरूप का निषेध करते हुए महबूब ने 'मदर इंडिया' फिल्म में उसके विविधतामूलक व्यक्तित्व को पूर्णता में प्रदर्शित करने का सफल प्रयास किया है। स्त्री चेतना के विविध रंग इस फिल्म में दिखलाई पड़ते हैं।

'मदर इंडिया' एक नायिका प्रधान फिल्म है। फिल्म भले ही 1957 में बनी थी लेकिन स्त्री चेतना को लेकर अपने समय से यह बहुत आगे थी। इसमें स्त्री को मात्र पुरुषों के मन बहलाव के साधन के रूप से पूर्णतया मुक्ति दी गयी है। जो काम एक स्त्री कर दिखाती है। उसके सामने कोई पुरुष तो क्या, पूरा गाँव नतमस्तक हो जाता है। राधा के चरित्र के जरिए इस फिल्म में नरगिस ने स्त्री के व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान की है।

'मदर इंडिया' की राधा शादी के बाद जब अपने पति के गाँव आती है, तो उसे अपनी नियति की कोई खबर नहीं है। उसका पति एक मेहनती किसान है और राधा घर से लेकर खेतों में उसका साथ दे रही है। लेकिन सुखी लाल का क्रूर शोषण चक्र किसी ईमानदार और मेहनती किसान को आराम से कहाँ रहने दे सकता है। त्रासदियों का एक लंबा सिलसिला राधा का इंतजार कर रहा है। उसका पति अपंग हो जाता है और एक रात वह अपनी पत्नी के माथे का सिंदूर पोंछकर पत्नी–बच्चों को छोड़कर भाग जाता है। राधा जिंदगी की एक लंबी लड़ाई शुरु करती है। कभी–कभी वह अपने को कमजोर भी पाती है पर उसकी ताकत बहुत जल्दी ही उसकी कमजोरियों को खत्म कर देती है।

राधा इस तथ्य को समझती है कि जब तक उसकी आर्थिक स्थिति नहीं सुधरती तब तक उसके समस्या का समाधन नहीं हो सकता। जिस ग्रामीण परिवेश, कृषि संस्कृति एवं महाजनी सभ्यता से वह ताल्लुक रखती है वहाँ आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने का मतलब था

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

खेतों में निरंतर कड़ी मेहनत एवं अप्रत्याशित धैर्य का परिचय देना। आस्थापूर्वक वर्षों तक श्रमरत रहना। ऐसा करके ही स्थिति को अपने अनुकूल बनाया जा सकता था। राधा को निरंतर कड़ी मेहनत के कारण अपने इस मकसद में सफलता मिलती है। लेकिन इसके लिए उसे वर्षों तक अपनी शारीरिक, मानसिक क्षमता का दोहन करना पड़ता है।

जीवन का महासंघर्ष राधा को बुढ़िया बना देता है।[5] उसके दो बेटे रामू और बिरजू जवान हो चुके हैं। राधा इस बीच सारे गांव की माँ बन चुकी है। भीषण बाढ़ में वह भागते ग्रामवासियों में एक नया जोश एक नई ताकत जगाती है। राधा का बेटा बिरजू अन्याय के सामने खामोश नहीं रहना चाहता । वह अपनी माँ का अपमान बर्दाश्त नहीं कर पाता है। सुखीलाल से वह सख्त नफरत करता है। सुखी से एक हिंसक मुठभेड़ के बाद बिरजू गांव से भागकर डाकू बनने के लिए मजबूर हो जाता है। और एक दिन जब बदले की आग में झुलस रहा बिरजू जमींदार की बेटी को अपमानित करना चाहता है, तो राधा यह बर्दाश्त नहीं कर पाती है। वह अपने ही बेटे को बंदूक का निशाना बना देती है।

पर्ल बक के उपन्यास 'मदर' पर आधरित 'औरत' के सत्रह साल बाद महबूब ने 'मदर इंडिया' को बड़े कैनवास पर बनाया।[6] 'औरत' में महबूब ने सरदार अख्तर को नायिका बनाया था। 'मदर इंडिया' में यह चुनौतीपूर्ण भूमिका बड़े कैनवास पर नर्गिस को दी गई। पिछले चार दशकों में 'मदर इंडिया' के अनेक प्रसंगों की छाप अनेक चर्चित–अचर्चित फिल्मों में देखी जा सकती है।[7] 'मदर इंडिया' की राधा अपने बच्चों की माँ ही नहीं है बल्कि वह पूरे गांव की मां है। जब गाँव के नैतिक जीवन के लिए राधा को अपना बेटा ही खलनायक नजर आने लगता है तो वह उसे भी खत्म कर देने के लिए तैयार है।

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

एक स्त्री किस तरह न सिर्फ अपने पारिवारिक उत्तरदायित्वों की पूर्ति तमाम विपरीत परिस्थितियों के बावजूद करती है बल्कि अपने समाज एवं संस्कृति की नैतिक मूल्यों को बरकरार रखने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देती है। प्रायः स्त्रियों का अपने पुत्र के प्रति अतिशय मोह को उसकी दुर्बलता के रूप में देखा जाता रहा है। सामाजिक नैतिकता के लिए अपने ही पुत्र, जिसे वह सर्वाधिक प्यार करती है, उसकी हत्या कर देना, निश्चित रूप से स्त्री के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का पर्दे पर उद्घाटन है। ऐसे चरित्र की भूमिका के लिए अभिनेत्रियाँ तरसती रहती हैं पर ऐसा मौका मिलना अपने आप में दुर्लभ है।

जिस तरह से 'मदर इंडिया' की राधा गाँव की प्रतिष्ठा के लिए खतरा बन चुके अपने ही पुत्र बिरजू को गोली मार देती है, वह दृश्य हर माँ और बेटे को रूला देता है।[8] रूलाकर भी यह दृश्य हिन्दी फिल्म के लिए अमर निधि है। साथ ही स्त्री चेतना के परंपरागत मिथक को भी इस दृश्य के जरिए प्रभावशाली ढंग से तोड़ कर नए कीर्तिमान की स्थापना की गयी है। इस फिल्म का क्लाइमेक्स, स्त्री के मूल्यों को लेकर गढ़े गए परंपरागत अवधारणाओं से उसे पूर्णतया मुक्ति प्रदान करता है।

स्त्री की सबसे बड़ी त्रासदी यही है कि वह अपनी भूमिका स्वयं कभी तय नहीं करती। न परंपरा में, न ही आधुनिकता में। उसकी भूमिका हमेशा ही अपनी जरूरतों को ध्यान में रखकर ताकतवर पुरुष या व्यवस्था तय करती है।[9]मोटे तौर से देखने पर ऐसा लगता है कि परंपरा में औरतें ज्यादा सुरक्षित थीं और कम स्वतंत्र थीं। अब ज्यादा स्वतंत्र और कम सुरक्षित हैं। ऐसा लगता है कि परंपरा में औरतों ने अपनी सुरक्षा की कीमत अपनी आजादी से चुकायी है। आधुनिक स्त्री अपनी आजादी की कीमत सुरक्षा से चुका रही है। परंतु सच ऐसा नहीं है।

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

इतना सपाट नहीं है। इतना स्पष्ट भी नहीं है सब कुछ। परंपरा में भी स्त्री की छवि और भूमिका बड़ी उलझी हुई हैं और आधुनिकता में भी।[10]

इसके बावजूद दोनों में एक बड़ा फर्क है। परंपरा में पीड़ा है। अपने मन का न कर पाने की। अपने मन की न कह पाने की। अपना वजूद स्वीकार न करवा पाने की। आधुनिकता में वह पीड़ा नहीं है। एक भ्रम है, अपने मन का कर पाने की। 'आजाद' हो पाने का। परंपरा और आधुनिकता ने औरतों को जो जगह दी है, उसमें अगर कोई फर्क है तो बस यह कि परंपरा में न औरतें दिखती थीं, न उनकी पीड़ा। अगर कभी–कभार किसी ने देखने की कोशिश की भी, तो कोशिश कम थी, महिमामंडन ज्यादा रहा।[11]प्रसंग से काट कर देखा गया। वह कभी सिर्फ '..... नीर दुख की बदली' बन कर रह गयी, तो कभी 'पिंजड़े का पंछी रे तेरा दर्द न जाने कोय.....' गा कर रह गये लोग।[12]

अगर किसी ने इस पिंजड़े को तोड़ने का दुःसाहस किया, तो वे या तो नफरत की पात्र बनीं या पूजा की। या तो उन्हें दफन कर दिया गया या मंदिरों में बिठा दिया गया। लेकिन 'मदर इंडिया' की राधा (नरगिस) के जरिए पर्दे पर स्त्री की पीड़ा को ही नहीं बल्कि इससे मुक्ति के लिए भी संघर्ष करते हुए दिखाया गया है। इस संघर्ष में न तो उसका अस्तित्व मिटता है और न ही संघर्ष की सफलता के बाद उसे पूजनीय बनाकर सामाजिक गतिविधियों एवं क्रिया–व्यापारों से किनारे लगाया गया है।

यद्यपि आधुनिकता ने स्त्रियों को पहले से थोड़ी ज्यादा जगह, थोड़ी ज्यादा स्वीकृति जरूर दी है। उससे भी बड़ी बात यह हुई है कि उनके सामने चुनाव के क्षेत्र ज्यादा हैं। परन्तु यह भी सच है कि वे उपेक्षा और अन्याय की भी ज्यादा शिकार हो रही हैं। अन्याय–अत्याचार

के खिलाफ तो लड़ा जा सकता है। हर क्षेत्र में अपनी–अपनी परिस्थितियों और औकात के हिसाब से लड़ भी रही हैं। परन्तु उपेक्षा ! यह बड़ी भयानक होती है। न तो उपेक्षा का दर्द कहीं दर्ज हो पाता है और न ही उपेक्षा के खिलाफ लड़ाई। परंपरा में उपेक्षा नहीं है। पर नाहक की दखल अंदाजी इतनी ज्यादा है कि स्त्रयों की अपनी निजी जिंदगी, अपने लिए समय, कुछ करने की चाहत, अपने लिए कोई सपना देखने की कोशिश सबको स्वार्थ का नाम दे देता है।[13] उसकी आँखें इस तरह से बंद कर दी गयीं कि वह अपने लिए सोच ही न सके।

इस दृष्टि से 'मदर इंडिया' की राधा की सफलता आश्चर्यजनक है। उसके चरित्र में परंपरा और आधुनिकता दोनों का समावेश है। साथ ही इन मूल्यों का अतिक्रमण फिल्म में राधा के चरित्र के जरिए बार–बार प्रकट होता है। वस्तुतः 'मदर इंडिया' की राधा का चरित्र स्त्री–चेतना की दृष्टि से पूरे फिल्म में व्यापक फलक लिए हुए है। जिसे किसी पारिभाषिक मान्यता के दायरे में लाना असंभव है।

संदर्भ सूची :–

[1]स्त्री, परंपरा और आधुनिकता–संपादक राजकिशोर, वाणी प्रकाशन, पृ.सं.–71
[2]वही
[3]वही
[4]वही
[15] सिनेमाः कल,आज,कल – विनोद भारद्वाज, वाणी प्रकाशन, पृ.सं.–461
[6]वही
[7]वही
[8]आरोह–अवरोह, अप्रैल 2009, सम्पादक–डॉ शंकर प्रसाद, पृ.सं.–42

[9]स्त्री, परंपरा और आधुनिकता—संपादक राजकिशोर, वाणी प्रकाशन, पृ.सं.—156

[10]वही

[11]वही

12 वही

[13]वही, पृ.सं.—157